डॉ रेणु कुमारी
भारती मण्डन महाविद्यालय
रहिका

B.A. पार्ट-III
PAPER- VII
DATE - 24-08-20

राजनीतिविज्ञान प्रतिष्ठा

कार्ल मार्क्स

कार्ल मार्क्स का वर्ग युद्ध का सिद्धांत -

मार्क्स के दर्शन को समझने के वर्ग की संकल्पना को समझना महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति के वर्ग को निर्धारित करने की एकमात्र कसौटी (भूमि, पूंजी, मशीनें और प्रौद्योगिक आदि) उत्पादन के साधनों का स्वामित्व या उन पर नियंत्रण है। जो लोग उत्पादन के साधनों के स्वामित्व होते हैं या उत्पादन के साधनों पर उनका नियंत्रण होता है उन्हें बुर्जुआ (शोषणकर्ता) कहते हैं और जिन लोगों के पास श्रम की शक्ति होती है उन्हें सर्वहारा वर्ग या मजदूर वर्ग (शोषित) वर्ग कहते हैं। इस प्रकार मार्क्स ने उत्पादन के तरीके में व्यक्ति की स्थिति और उसके परिणामस्वरूप उत्पादन के सम्बन्धों में उसकी स्थिति की दृष्टि से दोहरी कसौटी के आधार पर वर्गों की परिभाषा की है। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व (या नियंत्रण) का अभाव, संपत्ति का अभाव और तत्काल का

काम काम (नौकरी आदि) पाने की आवश्यकता (अर्थात् अनिश्चित श्रमिक वर्ग आदि सर्वहारा वर्ग के कुछ विशिष्ट अभिलक्षण है। चूँकि वर्ग उत्पादन के साधन के स्वामित्व (या नियंत्रण) या संपत्ति के स्वामि पर आधारित है, इसलिए वर्ग भेद की समाप्ति संपत्ति की समाप्ति पर निर्भर करती है जो इस विषय में उस व्यक्ति की स्थिति का निर्धारक तत्व है।

साम्यवादी नीति संबंधी घोषणा पत्र कम्युनिस्ट मेनीफेस्टो (communist manifesto) में मार्क्स एंगेल्स ने घोषित किया है कि अब तक के वर्तमान समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। उनका कथन है कि वर्ग संघर्ष मानव इतिहास की प्रेरक शक्ति रहा है। पूँजीवादी समाजों में वर्गभेद बहुत स्पष्ट है। वहाँ वर्ग चेतना अपेक्षाकृत अधिक विकसित और वर्ग संघर्ष सबसे अधिक गंभीर है। इस प्रकार पूँजीवाद वर्गों के ऐतिहासिक विकास और वर्ग संघर्ष में चरम बिंदु है। बुर्जुआ (मध्यमवर्गीय) युग का विभेदक अभिलक्षण यह है कि इसमें समग्र रूप में समाज दो खेमों में अधिकाधिक बँटता जा रहा है।